Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 13th Dec. 2018, Revised on 18th Dec. 2018; Accepted 26th Dec. 2018

शोधपत्र

इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में आने वाले परिवर्तन का अध्ययन

* पूनम श्रीवास्तव
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
poonamshri58@gmail.com
मोबाईल– 9462744423

Key words: इन्टरनेट, कम्प्यूटर, ऑन–लाईन आदि।

वर्तमान समय में तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी का विकास शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से हो रहा है। इस सदी में अगर हम बात करें तो कम्प्यूटर व इन्टरनेट का नाम सर्वप्रथम आता है। शोधकर्त्री ने इन्टरनेट का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग किये जाने से विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने के लिये 50 विद्यार्थियों से इसके संबंध में विभिन्न आयामों के संदर्भ में अभिमत जानने का उद्देश्य रखा। इस हेतु एक पांच बिन्दु अभिवृत्ति मापनी से अभिमत प्राप्त किया गया। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु मूल्य की गणना की गई। शोध के मुख्य निष्कर्ष में पाया गया की विद्यालयों में इन्टरनेट के प्रयोग व इन्टरनेट को बढ़ावा देने के कारण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में परिवर्तन हो रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी इन्टरनेट से काम करने व उसकों समझनें के प्रति उत्सुक व उत्साहित हैं।

प्रस्तावना :–

इन्टरनेट विश्वभर में फैले हुये असंख्य कम्प्यूटरों के नेटवर्क का नेटवर्क है। इसके केन्द्र में कोर कम्प्यूटर जैसी कोई चीज नहीं है। इन्टरनेट विश्वभर में फैली हुई लाखों कम्प्यूटर प्रणालियों से निर्मित एक संयुक्त सृष्टि है। यह किसी को भी ज्ञात नहीं है कि इस कम्प्यूटर जाल से कितने कम्प्यूटर जुड़े हुए हैं।

40 वर्ष पूर्व अमेरिकी रक्षा विभाग ने सैन्य अनुसंधानकर्ताओं को एक दूसरे के सम्पर्क में रखने के उद्देश्य से एक प्रयोग के तौर पर ऐसे प्रथम कम्प्यूटर नेटवर्क की रचना की थी जो उन्हें आपस में जोड़ता था और वर्तमान समय में इन्टरनेट विश्वभर में करोडो उपयोगकर्ताओं को एक दूसरे से जोड़ता है। सैंकण्डों में वांछित सूचनाओं तक पहुँचने की इस ''ऑन–लाईन'' सुविधा ने संचार के लिए नए परिदृश्य खोल दिये है। विश्व के प्रत्येक क्रिया–कलाप एवं जीवन के प्रत्येक आयाम को लगभग इन्टरनेट नें अपने आगोश में भर लिया है। कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है, चाहे वह कृषि का क्षेत्र हो या स्वास्थ्य का, शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा हैं। नव प्रवर्तक सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकों के आगमन ने वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में अत्यधिक परिवर्तनों को गति दी है।

इसलिए यहॉ प्रस्तुत आलेख में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के द्वारा किये जाने वाले इन्टरनेट के प्रयोग से उनकी अध्ययन आदतों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है उसको जानने के लिए इस समस्या को अपने शोध का आधार बनाया है, क्योंकि शिक्षा के क्षेत्र में यह परिवर्तन बहुत तीव्रता से हो रहा है। जिसका प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े सभी लोगों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पड़ रहा है। अतः शोधकर्त्री द्वारा उच्च–माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर इन्टरनेट के प्रयोग से अध्ययन आदतों में होने वाले परिवर्तन से संबंधित शोध करने का निश्चय किया गया है।

अध्ययन का औचित्य :–

वर्तमान समय में बालक की अध्ययन आदतें, व्यवहार को प्रभावित करने वाला अगर कोई सबसे महत्वपूर्ण कारक है तो वह है इन्टरनेट। इन्टरनेट की तकनीकी का विकास ज्ञान को बढ़ाने के लिए किया गया है लेकिन सच तो यह है कि नई तकनीकी के साथ– साथ नई–नई चुनौतियां भी सामने आती है। इन्टरनेट पर ज्ञान के साथ–साथ सामाजिक शोपिंग, मनोरंजन और व्यक्तिगत जानकारी की एक बड़ी राशि साझा करने की सुविधा भी प्रदान की जाती है। कहीं ऐसा तो नहीं है की छात्र नई जानकारी प्राप्त

करके अपने ज्ञान को बढ़ाने के स्थान पर अवांछित गतिविधियों की तरफ ज्यादा आकर्षित हो रहा है। छात्र की अध्ययन आदतों में नकारात्मक परिवर्तन तो नहीं आ रहा है। इस प्रश्न का उत्तर पाना वर्तमान समय में अनिवार्य है।

समस्या का अभिकथन :–

" इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में आने वाले परिवर्तन का अध्ययन"

समस्या अभिकथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या :–

(क) इन्टरनेट :– इन्टरनेट का शाब्दिक अर्थ है अन्तर्राट्रीय कम्प्यूटर तंत्र का अन्तरजाल। डेटा संचारण और विनिमय की सुविधा के लिए टी.सी.पी./आई.पी.नेटवर्क प्रोटोकॉल का उपयोग करने वाले कम्प्यूटर नेटवर्क के एक विश्वव्यापी नेटवर्क से मिलकर बने एक कम्प्यूटर नेटवर्क को इन्टरनेट कहते है।

(ख) अध्ययन आदतें :– अध्ययन के उत्त्म नियमों का अनुसरण करना ही अध्ययन आदतें कहलाता है। अध्ययन आदतें किसी विद्यार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी और निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में परिवर्तन का अध्ययन करना।
2. इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का लिंगगत अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाए :–

1. इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी और निजी विघालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में लिंगगत अन्तर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श :–

शोधकर्त्री ने शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए न्यादर्श के रूप में 50 विद्यार्थियों का चयन किया है।

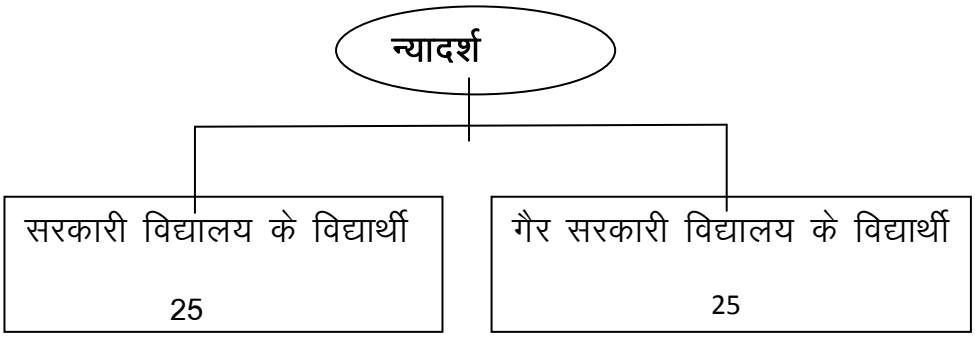

चर :–

1 इन्टरनेट।
2 अध्ययन आदतें।

सीमांकन :– जयपुर शहर के एक सरकारी व एक गैर सरकारी विद्यालय को ही लिया गया है।

सांख्यिकी :–

1. मध्यमान
2. एस. डी.
3. टी

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

परिकल्पना संख्या – 1

"इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है"।

तालिका संख्या –1

स्मूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी मूल्य	स्वीकृत / अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	25	121.44	12.02	3.47	6.80	अस्वीकृत
गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	25	145.08	12.08			
0.05 सार्थकता स्तर = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48 0.01 सार्थकता स्तर = 2.68						

तालिका संख्या एक के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के अंको का मध्यमान 121.44 एवं मानक विचलन 12.02 हैं तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के अंकों का मध्यमान 145.08 एवं मानक विचलन 12.50 है। तथा दोंनों समूह की मानक त्रुटि 3.47 है। तथा स्वतंत्रता के अंश 48पर 'टी' मूल्य 6.80 प्राप्त हुआ है। जो 0.05के सार्थकता स्तर के प्रमापित 'टी' मूल्य 2.01 से अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अतः प्राप्त दत्तांशो के आधार पर **'इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर पाया जाता है"।**

परिकल्पना संख्या –2

"इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में लिंगगत अन्तर नहीं पाया जाता है"।

तालिका संख्या –2

स्मूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी मूल्य	स्वीकृत / अस्वीकृत
सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के बालक	30	234.9	16.25	4.93	0.83	स्वीकृत
सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की बालिकाएं	20	130.8	18.29			
0.05 सार्थकता स्तर = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48 0.01 सार्थकता स्तर = 2.68						

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के बालकों की अध्ययन आदतों के अंको का मध्यमान 134.9 एवं मानक विचलन 16.25 है तथा सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की बालिकाओं की अध्ययन आदतों के अंकों का मध्यमान 130.8 तथा मानक विचलन 18.29 है। तथा दोनों समूह के बीच की मानक त्रृटि 4.93 है तथा स्वतंत्रता के अंश 48 पर 'टी' मूल्य 0.83 प्राप्त हुआ है। जो 0.05 के सार्थकता स्तर के प्रमापित 'टी' मूल्य 2.01 से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः प्राप्त दत्तों के आधार पर **'इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में लिंगगत अन्तर नहीं पाया जाता है"।**

निष्कर्ष :–

इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर पाया गया।

इन्टरनेट के प्रयोग से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में लिंगगत अन्तर नहीं पाया गया ।

सन्दर्भ :–

1. कपिल, के.एच. 2012, अनुसन्धान विधियां आगरा, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस।
2. गुप्ता, एस.पी., 2003 : सांख्यिकी विधियॉ, इलाहबाद, शारदा पुस्तक भवन।
3. दौडियाल एवं पाठक, एस., 1972 : शैक्षिक अनुसन्धान, का विधि शास्त्र, (प्र..सं.) जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
4. पाण्डेय, डॉ. कामता प्रसाद 2008 : शैक्षिक अनुसन्धान, (तृ.सं.) वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. भार्गव, महेश, 2003 : आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।
6. शर्मा, ए.आर., 2000 शिक्षानुसन्धान, (नवीन सं.) मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन्स।

**** Corresponding Author:***

पूनम श्रीवास्तव

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

poonamshri58@gmail.com, Mobile - 9462744423